



बूँद-बूँद से सागर

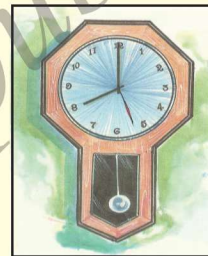
- केदारनाथ कोमल

इस कविता के द्वारा छात्र सीख सकते हैं कि छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने से बड़े-बड़े सार्थक काम बनते हैं, जिससे धरती पर सुख-संतोष छा जाता है।

बूँद-बूँद के मिलने से
बन जाता है सागर,
सूत-सूत के मिलने से
बन जाती है चादर।



मिनट-मिनट ही तो मिलकर
बन जाता है साल,
तन-मन से तुम डटे रहो
हल होंगे सभी सवाल।



पैसा-पैसा जोड़ो तो
बन जाओगे धनवान,
थोड़ा-थोड़ा चलकर ही तो
देख सकोगे हिन्दुस्थान।



अच्छे-अच्छे काम करो
और बातें प्यारी-प्यारी,
देश हमारा झूम उठेगा
नाच उठेगी धरती सारी।

